रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer- Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942 Impact Factor 5.125 (IIFS) Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory © ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205



2022 www.researchjournal.in

अंक 37 हिन्दी संस्करण

वर्ष - 19

जुलाई-दिसम्बर 2022

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer-Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942 Impact Factor 5.125 (IIFS) Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest U.S.A. Title Id: 715205

अंक-37

हिन्दी संस्करण

वर्ष-19

जुलाई - दिसम्बर 2022

डॉ. अखिलेश शुक्ल

ऑनरेरी सम्पादक प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड तथा पं. गोविन्द वल्लभ पंत एवार्ड से सम्मानित akhileshtrscollege@gmail.com

डॉ. संध्या शुक्ल

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) drsandhyatrs@gmail.com

डॉ. गायत्री शुक्ल

अतिरिक्त निदेशक, सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा shuklagayatri@gmail.com

डॉ. आर. एन. शर्मा

सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा, रीवा rnsharmanehru@gmail.com



सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा

की मुख्य शोध पत्रिका म.प्र. सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1973 के अंतर्गत पंजीकृत पंजीयन क्रमांक 1802, सन् 1997

विषय विशेषज्ञ/परामर्श मण्डल

- 1. डॉ. अरविंद जोशी, सेवानिवृत आचार्य, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी arvindvns@outlook.com
- 2. डॉ. रामशंकर, कुलपति, पं. शम्भूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल rs dubey@yahoo.com
- 3. डॉ. डी. एस. राजपूत, आचार्य, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर drdiwakarrajeut@rediffmail.com
- 4. डॉ. बी. के. सिंह, आचार्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी imdrbrajesh.kv@gmail.com
- 5. डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सेवानिवृत आचार्य, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा

anjali apsu@rediffmail.com

- 6. डॉ. बी. पी. बडोला, सेवानिवृत्त आचार्य, कांगड़ा हिमाचंल प्रदेश bpbadola@gmail.com
- 7. डॉ. आभा सक्सेना, सह प्राध्यापक, अग्रसेन कन्या स्वशासी महाविद्यालय वाराणसी drabhasaxena7@gmail.com
- 8. डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, आचार्य, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट pragyamishramgcgv@gmail.com
- 9. डॉ. आशीष सक्सेना, आचार्य, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद उत्तर प्रदेश। ashish.ju@gmail.com
- 10. डॉ. ज्योति उपाध्याय, आचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन मध्य प्रदेश drjyotiupadhyay11@gmail.com
- 11. डॉ. प्रमिला पुनिया, सह प्राध्यापक, इतिहास, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान pramilapoonia@rediffmail.com
- 12. डॉ. मृदुल जोशी, आचार्य, गुरुक्तुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार dr mriduljoshi@yahoo.com
- 13. डॉ. शैलजा दुबे, प्राध्यापक, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय भोपाल shailjadubey70@yahho.in
- 14. डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव, आचार्य, शासकीय कला महाविद्यालय कोटा राजस्थान dr21pramila@gmail.com
- 15. डॉ. जयशंकर शाही, आचार्य, अलवर राजस्थान jayshankarshahi@gmail.com
- 16. डॉ.एन. पी. त्रिपाठी, सेवानिवृत्त आचार्य, रीवा मध्य प्रदेश
- 17. डॉ. राजेश भट्ट, एच. एन. बी. केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड rajeshbhatt11@gmail.com

Guide Lines

- **General:** English and Hindi Editions of Research Journal are published separately. Hence Research Papers can be sent in Hindi or English.
- Manuscript of research paper: It must be original and typed in double space on the one side of paper (A-4) and have a sufficient margin. Script should be checked before submission as there is no provision of sending proof. It must include Abstract, Keywords, Introduction, Methods, Analysis, Results and References. Hindi manuscripts must be in Devlys 010 or Kruti Dev 010 font, font size 14 and in double spacing. All the manuscripts should be in two copies and in Email also. Manuscripts should be in Microsoft word program. Authors are solely responsible for the factual accuracy of their contribution.
- References: References must be listed cited inside the paper and alphabetically in the order- Surname, Name, Year in bracket, Title, Name of book, Publisher, Place and Page number in the end of research paper as under- Shukla Akhilesh (2018) Criminology, Gayatri Publications, Rewa: Page 12.
- **Review System:** Every research paper will be reviewed by two members of peer review committee. The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clear and logical analysis, fairly good English or Hindi and sound methodology of research papers. The Editor reserves the right to reject any manuscript as unsuitable in topic, style or form without requesting external review.

लेखकों से निवेदन-

- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेज (ISSN-0973-3914) सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज की मुख्य शोध पत्रिका है, जो मानव संसाधन मंत्रालय तथा पंजीयक समाचार पत्र एवं पत्रिका, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत हैं।
- शोध पत्रिका उलिरच इन्टरनेशनल पीरियाडिकल्स डाइरेक्ट्री प्रोक्वेस्ट, संयुक्त राज्य अमेरिका से इंडेक्स्ड और लिस्टेड हैं।
- शोध पत्रिका का अंग्रेजी एवं हिन्दी संस्करण अलग-अलग प्रकाशित होता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस का प्रकाशन प्रतिवर्ष जून एवं दिसंबर में किया जाता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस को इम्पैक्ट फैक्टर एवं आई.एस.एन प्राप्त हैं। शोध पत्रिका Peer-Reviewed हैं।
- शोध पत्रिका के नवीनतम अंक में प्रकाशित शोध पत्रों को हमारी वेबसाइट www.researchjournal.in (Current Issue) में देखा जा सकता है तथा डाउनलोड किया जा सकता है।
- 🍨 शोध पत्रिका का प्रिंट एडीशन सदस्यों को अलग से डाक द्वारा भेजा जाता है।
- शोध पत्र में शीर्षक, नाम, पद, पदस्थापना का विवरण, पत्र व्यवहार का पता तथा दूरभाष क्रमांक,
- मोबाइल नं., ई-मेल एडेस अवश्य दिया जाये।
- शोध पत्र के प्रारम्भ में कम से कम 50-100 शब्दों का सारांश दिया जाये।
- मुख्य शब्द सारांश के नीचे टाइप कराया जाये।

- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये। लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट- पेज मेकर की फाइल, पी.डी.एफ. फाइल, स्कैन मैटर आदि में कदापि शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी लिपि में कृतिदेव या देवलिस फांट 010(फॉन्ट साइज 14, स्पेस डबल, मार्जिन ए-4 साईज के कागज में चारो तरफ 1 इंच) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।

सर्वप्रथम शोध पत्र ई-मेल द्वारा भेजें-

researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com

शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादकीय कार्यालय द्वारा लेखक को ई-मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।

© सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज

एक अंक रुपये 500.00

	-सदस्यता शुल्क -	
अवधि	व्यक्तिगत सदस्यता	संस्थागत सदस्यता
वर्ष एक	2000-00	2500-00
वर्ष दो	2500-00	4000-00

सदस्यता शुल्क की राशि गायत्री पब्लिकेशन्स के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच-रीवा सिटी (आईएफएस कोड 0004667 MICR Code 486002003) के खाता क्रमांक 30016445112 में जमा की जाय।

प्रकाशक:

गायत्री पब्लिकेशन्स

रीवा- 486001 (म.प्र.)

मुद्रक:

ग्लोरी ऑफसेट

नागपुर

संपादकीय कार्यालय

186/1, विन्ध्य विहार कॉलोनी लिटिल बैम्बीनोज स्कूल कैम्पस रीवा- 486001 (म.प्र.) दूरभाष- 7974781746

E-mail- researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com www.researchjournal.in

रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के हैं, जिनके विषय में सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। रिसर्च जरनल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी हैं। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, रीवा जिला रीवा (म.प्र.) रहेगा।

सम्पादकीय

समाज की मूलभूत और सबसे महत्वपूर्ण इकाई प्रारंभ से परिवार ही रहा है। देश के सशक्तिकरण एवं विकास के लिए सबसे पहले परिवार जैसी बुनियादी संस्थाओं के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों पर हमें ध्यान देना अति आवश्यक है। समाज के विकास के लिए परिवार का संतुलित विकास अति महत्वपूर्ण है। अत: हमें यदि देश का संपूर्ण एवं संतुलित विकास करना है तो हमें परिवार नामक बुनियादी संस्था पर सबसे ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवार में पुत्र और पुत्री के बीच कोई भी भेदभाव ना करें और यह हम अपने पुत्रों को आवश्यक रूप से समझाएं और उनके क्रियाकलापों में शामिल भी करवाएं। आज भी पुरानी मान्यता के जो लोग हैं, उनका यह मानना है कि औरत को कोई आजादी नहीं मिल सकती, वह अकेले कहीं नहीं जा सकती हैं, वह अकेले कहीं घूम-फिर नहीं सकती हैं, लेकिन इन मूल्यों को आज का युवा मानने से इनकार करता है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मकान में जो महत्वपूर्ण स्थान दीवालों का का होता है, समाज में वही महत्व लड़कों की शिक्षा का है। लेकिन घर बनता कैसे है? घर के आधार में कौन हैं? घर के आधार में हमारी पुत्रियां हैं, हमारी लड़िकयां हैं, अर्थात उनका संबंध जड़ से है। समाज में अगर हमारी जड़ ही कमजोर हो गई तो हमारा घर या मकान बिल्कुल मजबूत नहीं हो सकता है। इस सामाजिक संदर्भ को यथार्थ में समझने की आवश्यकता है।

पक्षपात की हद तो तब हो जाती है जब छोटे छोटे कार्यों में हमें भेदभाव दिखता है। कुछ लोगों ख्याल है कि लड़की पराया धन होती है, उसे कौन सी नौकरी करनी है। इसलिए कुछ मां-बाप लड़के और लड़की में भेदभाव करते हैं और यह भेदभाव हमारे व्यवहार में खिलाने-पिलाने में पहनाने-उढ़ाने में भी कहीं ना कहीं दिखाई देता है। यह सरासर अन्याय है। ईश्वर ने लड़के और लड़कियों को एक जैसा मस्तिष्क दिया है और आज लड़कियां बेहतर परिणाम लाकर यह सिद्ध भी कर रही है।

लड़िकयां तो मां-बाप के घर कुछ ही दिन रहती है, इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनके शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण पर गहराई से ध्यान दें, तभी हम एक सशक्त समाज की संकल्पना को पूरा कर सकते हैं। ईश्वर ने हमें हमारे बच्चों का ट्रस्टी बनाया है इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम पूरे न्याय के साथ सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करें क्योंकि लड़के और लड़िकयों दोनों में एक जैसी शक्ति है, एक ही आत्मा है। अत: हमें उन्हें विकास का समान अवसर दिया जाना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण का मूलभूत उद्देश्य महिलाओं का विकास और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना हैं। महिला सशक्तिकरण समाज के संपूर्ण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं का सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रघटना है, क्योंकि वे रचनाकार होती हैं। अगर आप उन्हें सशक्त करें, उन्हें शक्तिशाली बनाएं, प्रोत्साहित करें, यह समाज के लिए बेहतर है। महिला और पुरूष सृष्टि निर्माण और मानव समाज के आधार हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक है। ये जीवन रूपी रथ के ऐसे पहिये हैं

जिनसे जीवन-यात्रा सुचारू रूप से संचालित होती है। परिवार और समाज में स्थायित्व के लिए दोनों की ही भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण रही हैं। किसी समाज में परिवर्तन और विकास का आधार पुरूषों और महिलाओं के पारस्परिक मेल-जोल, कदम से कदम मिलाकर चलने और दोनों की समान गितशीलता पर ही निर्भर है। किसी भी एक पक्ष के पिछड़ने पर सामाजिक जीवन में अराजक स्थिति निर्मित होती है। मानव जाति का इतिहास इसका साक्षी हैं कि जहाँ महिलाओं की उपेक्षा की गई है, वहाँ समाज का विकास अवरूद्ध हुआ है। सृष्टि की रचना, बच्चों की शिक्षा, परिवार की परवरिश के रूप में महिला की भूमिका पुरूष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होने से समाज रचना में उसकी स्थिति केन्द्रीय हो जाती है। अत: स्त्रियों की उन्नति के बिना मानव जाति और समाज का उत्थान नहीं हो सकता। जहाँ तक भारत का संबंध हैं ''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात् जहाँ महिलाओं की पूजा होती है। वहां देवताओं का वास होता है। इस आदर्श के साथ कोई भी भारतीय स्त्री पश्चिमी स्त्री की तुलना में गौरव का अनुभव कर सकती हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती में,धन का आदर्श लक्ष्मी में, पराक्रम का आदर्श दुर्गा में, पवित्रता का आदर्श गंगा में, यहाँ तक कि सृष्टि सृजन का आदर्श जगद् जननी के रूप में हमें केवल भारत में ही देखने को मिलता हैं।

(डॉ. अखिलेश शुक्ल) प्रधान सम्पादक

अनुक्रमणिका

01	वीर सावरकर: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय चरित्र	09
	अरुण श्रीवास्तव	
02	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड की महिलाओं का योगदान	15
	राजेश चन्द्र पालीवाल	
03	डॉ. लोहिया का सांस्कृतिक चिन्तन: रामायण मेला योजना के विशेष सन्दर्भ में	20
	सुधा गुप्ता	
04	महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना का समाजशास्त्रीय	25
	अध्ययन (आगरा जिले के पिनाहट विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)	
	भूरी सिंह, अतुल कुमार	
05	भारतीय जीवन में शिवोपासना का धार्मिक महत्व	30
	अशुतोष शुक्ल	
06	महात्मा गाँधी : महिला विकास के प्रति दृष्टिकोण	39
	सीमा श्रीवास्तव	
07	महिला नेतृत्व के साामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण	44
	(रीवा जिले की पंचायतों के विशेष संदर्भ में एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन)	
	कोमल पांडे, अखिलेश शुक्ल	
08	महिला अपराधिता पुनर्वास एवं जेल व्यवस्था	53
0.0	गजानन मिश्र	
09	घरेलू हिंसाः वर्तमान समय की गहन समस्या व समाधान	60
10	अलका रानी	((
10	भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण	66
11	बिन्थ्याचल साह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ	70
11	नइ राष्ट्राय शिक्षा नाति 2020: सम्मायनाए एवं युनातिया सिद्धार्थ मिश्र	78
12	।सद्धाथ ।मश्र वैश्वीकरण का सामाजिक- आर्थिक प्रभाव	0.2
12		82
12	अजय सिंह गहरवार, अवनीश सिंह, महानन्द द्विवेदी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र में स्टार्टअप योजना	0.2
13	2, , ,	92
1.4	संगीता कुँभारे स्टार्ट अप योजना एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं का	101
14	स्थाट जप पाजना एप पिछड़ पर्ग का महिलाजा का सशक्तिकरण:एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	101
	कृष्ण कुमार पटेल, एस.एम.मिश्रा	
15	सतना जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समस्या एवं समाधान	100
13		108
1.0	गायत्री देवी, आर. पी. गुप्ता	115
16	मध्यप्रदेश में कृषि विकास की संभावनाएं एवं चुनौतियां	115
17	सुनीता सोलंकी पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य (नईगढ़ी-पिपराही के संदर्भ में)	121
1/	वंदना मिश्रा	121
	역도에 (부정)	

18	शहडोल संभाग में पर्यटन विकास का पारिस्थितिकी पर प्रभाव	127
	बी. पी. सिंह, सविता पटेल	
19	समाज और संस्कृति की विकास यात्रा (भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में)	133
	दिव्या मिश्रा	
20	शिव ब्रात है?	137
	अशुतोष शुक्ल	
21	श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष योग	143
	प्रत्यूष वत्सला द्विवेदी	
22	जैवविविधता और मानवीय क्रियाकलाप (पश्चिमी घाट के विशेष संदर्भ में)	147
	सुनील बाबू विश्वकर्मा, आकृति खरे	
23	पराबैंगनी किरणें ओजोन परत को किस तरह प्रभावित करती हैं	152
	मंजरी अवस्थी	
24	भारतीय संस्कृति में स्वदेशी खेलो की प्रासंगिकता का महत्व	156
	ममता	
25	भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित भावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	166
	पुरूषोत्तम कुमार साहू, अविनाश कुमार लाल	
26	लिंग भेदभाव का महिलाओं के विकास के अवसरों पर पड़ने वाले	171
	प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)	
	राधा मिश्रा , अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर	
27	महिला एवं बाल विकास योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक	179
	स्थिति पर प्रभाव (जिला सतना के विशेष संदर्भ में)	
	विमलेश द्विवेदी, अखिलेश शुक्ल	
28	लैंगिक असमानता के कारण एवं समाधान का समाजशास्त्रीय अध्ययन	188
	राधा मिश्रा, अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर	
29	महिला नेतृत्व एवं ग्रामीण विकास	194
	(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)	
	शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल	
30	बाल मानवाधिकार एवं भारत के समक्ष चुनौतियां	198
	जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार	
31	भारत में रोजगार की प्रवृत्तियाँ : महिलाओं के विशेष संदर्भ में	203
	कुमुद श्रीवास्तव	
32	पंचायतीराज् अधिनियम का प्रभाव महिला नेतृत्व एवं सामाजिक जागरुकता	210
	(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)	
	शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल	
33	अंतर्राष्ट्रीय विधि के अन्तर्गत बच्चों के शिक्षा के अधिकार: भारत के संदर्भ में	117
	जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार	
34	सल्तनकालीन महोबा	223
	महेन्द्र मणि द्विवेदी, रान् चौरसिया	

UGC Journal No. (Old) 40942, Peer- Reviewed Research Journal Impact Factor 5.125 (IIFS) ISSN 0973-3914 Vol.- 37, Hindi Edition, Year-19, July - Dec. 2022

श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष योग

• प्रत्यूष वत्सला द्विवेदी

सारांश- भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ चतुष्ट्य को विशेष महत्व दिया गया है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्ट्य मानव जीवन की परिपूर्णता के साधक है। वस्तुतः यह मानव जीवन के अमृत जीवन की संकल्पना को चिरतार्थ करने में सक्षम है। भारतीय संस्कृति के संवाहक होने के कारण इनका महत्त्व और बढ़ जाता है। इनकी समिष्ट को आधार बनाकर मानव जीवन की परिपूर्णता सहज में सिद्ध हो जाती है। सामाजिक अभ्युदय और कल्याण के लिये यह परमावश्यक है। व्यष्टि एवं समिष्ट दोनों समिवित्तियों के लिये गीता का ज्ञान सर्वथा प्रासंगिक है। इस ज्ञान की छाया में मानव जीवन की सार्थकता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

मुख्य शब्द - सम्बोधन, समबुद्धि, अनित्य, पराकाष्ठा, अनन्यचिन्त , नराधमकों

भारतीय दर्शन में मोक्ष का विशेष महत्व दिया है। वस्तुत: दर्शन जगत का अन्तिम लक्ष्य है क्लेशों से निवृत्ति। इस निवृत्ति का दार्शनिक सम्बोधन मोक्ष है। सांख्यदर्शन का अभिमत है कि अज्ञान या अविद्या के द्वारा बन्धन की प्राप्ति होती है और जब तत्व ज्ञान हो जाता है तो अज्ञान अविद्या नष्ट हो जाती है और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। श्रीमद्भगवद्गीता में इस प्रकार कहा गया है –

> ''देहिनो स्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिधीरस्तत्र न मृहृति।।'"

किन्तु जैसे जीवात्मा की इस देह में कुमार, युवा और वृद्धावस्था होती है वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है, इस विषय में धीर मोहित नहीं होता है। विद्वानों ने बन्धन को तीन प्रकार का बताया है – 1. प्राकृतिक बन्ध, 2. विकासात्मक बन्ध और 3. व्यक्तिगत बन्ध। प्रकृति को परमतत्व समझकर जो इसकी उपासना में लगे रहते हैं उन्हें प्राकृतिक बन्धन प्राप्त होता है। इसके विपरीत जो इन्द्रियों, मन आदि प्रकृति के विकारों में लीन रहते हैं, उन्हें विकासात्मक बन्धन प्राप्त होता है। अन्त में जो आत्मचिंतन को छोड़कर ईश्वर की सत्त में वि"वास करते हैं उन्हें व्यक्तिगत बन्धन प्राप्त होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्षयोग का सम्यक् वर्णन हुआ है। मोक्ष का तात्पर्य है कि मनुष्य आवागमन अर्थात् जन्म-मृत्यु से छुटकारा पा जाये। शीत-उष्ण, सुख-दु:ख देने वाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो उत्पत्ति, विनाशशील और अनित्य है, इसलिये मनुष्य को उन्हें सहन करना चाहिए। सुख-दु:ख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष

[•] असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, डी.बी.एस. कालेज, कानपुर

को ये इन्द्रिय और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मनुष्य मोक्ष के योग्य होता है। समबुद्धि पुरुष पाप और पुण्य दोनों को इसी लोक में त्याग देता है अर्थात् वह उनसे मुक्त हो जाता है। गीता में कहा गया है –

> ''कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिण:। जन्मबन्धविनिर्मुक्ता पदं गच्छन्त्यनामयम्।।"

अर्थात् समबुद्धि से युक्त ज्ञानीजन कर्मों से उत्पन्न होने निर्विकार परमपद को प्राप्त हो जाते हैं। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण कर्मसन्यास और कर्मयोग के विषय में बताते हैं – कर्म सन्यास और कर्मयोग ये दोनों ही परम कल्याण करने वाले हैं परन्तु उन दोनों में भी कर्म सन्यास से कर्मयोग साधन में सुगम होने से श्रेष्ठ है। जो पुरुष न किसी से द्वेष करता है और न किसी से आकांक्षा करता है वह कर्म योगी सदा सन्यासी ही समझने योग्य है, क्योंकि राग-द्वेशादि द्वन्द्वों से रहित पुरुष सुखपूर्वक संसार के बन्धन से मुक्त हो जाता है। गीता में कहा गया है –

"तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निश्ठास्तत्परायणाः। गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिधूर्तकल्मशाः॥"

जिनका मन तद्रूप हो रहा है, जिनकी बुद्धि तद्रूप हो रही है और सिच्चिदानन्द घन परमात्मा में ही जिनकी निरन्तर एकीभाव से स्थिति है ऐसे तत्परायण पुरुष ज्ञान के द्वार पापरिहत होकर अपुनरावृत्ति को अर्थात् परमगित को प्राप्त होते हैं। जो काम, क्रोध से रिहत है जीते हुए चित्त वाले परमब्रह परमात्मा का साक्षात्कार किये हुए ज्ञानी पुरुषों के लिये सब ओर से शान्त परब्रह परमात्मा ही पिरपूर्ण है। बाहर के विषय भोगों का न चिंतन करता हुआ उनको बाहर ही निकाल कर और नेत्रों की दृष्टि को भृकुटि के बीच में स्थित करके तथा नासिका में विचरने वाले प्राण और अपानवायु को सम करके जिसकी इन्द्रियों, मन, बुद्धि जीती हुई है ऐसा जो मोक्ष परायण मुनि इच्छा, भय क्रोध से रहित हो गया है वह सदा ही मुक्त है अर्थात् वह जन्म-मृत्यु से परे है। वश में किये हुए मन वाला योगी इस प्रकार आत्मा को निरन्तर मुझ परमेश्वर के स्वरूप में लगाता हुआ मुझमें रहने वाली परमानन्द पराकाष्ठा रूप शान्ति को प्राप्त होता है। प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने वाला योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में संसिद्ध होकर सम्पूर्ण पापों से रिहत होकर फिर तत्काल ही परमगित को प्राप्त हो जाता है। गीता में भगवान माया के विषय में बताते हैं –

''दैवी हेषा गुणमयी मम् माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।।''⁴

यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी ही दुस्तर है, परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं वे इस माया का अतिक्रमण कर जाते हैं, अर्थात् संसार से तर जाते हैं। जो शरण में होकर जन्म-मरण से छूटने के लिये यत्न करते हैं वे पुरुष ब्रह्द को, सम्पूर्ण अध्याय और अधिदेव के सिहत तथा अधियज्ञ के सिहत (सबका आत्मरूप) मुझे अनन्तकाल में भी जानते हैं, वे युक्तचित्त वाले पुरुष मुझे जानते हैं अर्थात् मुझे ही प्राप्त होते हैं। जो पुरुष अन्तकाल में भी मुझको स्मरण करता हुआ शरीर त्याग कर जाता है, वह पुरुष साक्षात मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है, इसमें कुछ भी संशय

नहीं है। वेद के जानने वाले विद्वान जिस सिच्चिदानन्द घनस्वरूप परमपद को अविनाशी कहते हैं, आसिक्त रहित यत्नशील सन्यासी महात्माजन जिसमें प्रवेश करते हैं और जिस परमपद को चाहने वाले ब्रह्म्चारी लोग ब्रह्म्चर्य का आचरण करते हैं, उस परमपद को संक्षेप में कहता हूँ –

''सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च। मूर्ध्न्याधायात्मन: प्राणमास्थितो योगधारणम्।। ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। य: प्रयति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।।"

अर्थात् सब इन्द्रियों के द्वारा को रोककर तथा मन को हृद्वयदेश में स्थिर करके, फिर उस जीते हुए मन के द्वारा प्राण को मस्तष्क में स्थापित करके, परमात्मसम्बन्धी योग धारणा में स्थित होकर जो पुरुष (ऊँ) इस एक अक्षररूप ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिंतन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगित को प्राप्त होता है। जो पुरुष मुझमें अनन्यचित्त हो जाता है, वह पुरुष परमगित को प्राप्त होता है। जो पुरुष मुझमें अनन्यचित्त हो जाता है, वह पुरुष परमगित को स्मरण करता है, उस नित्य निरन्तर मुझमें युक्त हुए योगी के लिए में सुलभ हूँ, अर्थात् मुझे सहज ही प्राप्त होकर दु:खों के घर एवं क्षणभङ्गर पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होते। योगी पुरुष इस रहस्य को तत्व से जानकर वेदों के पढ़ने में तथा, यज्ञ, तप दानादि कके करने में जो पुण्य फल कहा है, उन सबका अतिक्रमण कर जाता है और सनातन परमपद को प्राप्त होता है। भगवान कहते हैं कि जिसको पूजा जाता है वह उसी को प्राप्त होता है –

''यान्ति देवव्रता देवान्पितृन्न्यान्ति पितृव्रताः। भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनो पि माम्।''

गीता में भगवान कहते हैं कि जिनका मान और मोह नष्ट हो गया है, जिन्होंने आसिक्तरूप दोष जीत लिया है। जिनकी परमात्मा के स्वरूप में नित्य स्थिति है और जिनकी कामनायें पूर्णरूप से नष्ट हो गई है, वे सुख-दु:ख नामक द्वन्द्वों से विमुक्त ज्ञानीजन उस अविनाशी परमपद को प्राप्त होते हैं जिस परमपद को प्राप्त होकर मनुष्य लौट कर संसार में नहीं आते। उस स्वयं प्रकाशरूप परमपद को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है न चन्द्रमा और न अग्नि ही, वही मेरा परमधाम है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कहते हैं कि हे अर्जुन! मैं द्वेष करने वाले पापाचारी और क्रूरकर्मी नराधमकों को संसार में बार-बार आसुरी योनियों में ही डालता हूँ। वे मूढ़ मुझको न प्राप्त होकर जन्म-जन्म में आसुरी योनियों को प्राप्त होते हैं और फिर उनसे भी नीच गित को प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरक में पडते हैं।

काम, क्रोध तथा लोभ ये तीन प्रकार के नरक के द्वारा आत्मा को नाश करने वाले अर्थात् उसको अधोगति में ले जाने वाले हैं। अतएव इन तीनों को त्याग देना चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं –

> ''एर्तर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः। आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्।।''

हे अर्जुन! इन तीनों नरक के द्वारों से मुक्त पुरुष अपने कल्याण का आचरण करता है। (अपने उद्धार के लिये भगवद्ज्ञानुसार बरतना ही अपने कल्याण का आचरण करना है) इससे यह परमगित को प्राप्त हो जाता है अर्थात् मुझको प्राप्त हो जाता है।

गीता में भगवान् कहते हैं कि हे अर्जुन! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही कृपा से तू परम शान्ति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा। भगवान कहते हैं- जो पुरुष मुझमें परम प्रेम करके इस परम रहस्ययुक्त गीताशास्त्र को मेरे भक्तों से कहेगा, वह मुझको ही प्राप्त होगा इसमें कोई संदेह नहीं है।

गीता में भगवान कहते हैं, जो मुझको भजेगा वह मुझको ही प्राप्त होगा अर्थात् उसको मोक्ष की प्राप्ति होगी। वस्तुत: मोक्ष एक अनुभूति है जिस अवस्था में आत्मा को अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाता है, वही अवस्था मोक्ष कहलाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि गीता में मोक्षयोग का सम्यक् निरूपण हुआ है।

> अस्ति गीता महत्त्वं परं भूतले। प्राप्य गीता प्रसादं नरो मोदते।। मोक्ष योगा नरै सर्वथा तन्यते। ज्ञानयोगेन चित्तं प्रमोदायते।।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

- 1. श्रीमद्भगवद्गीता 2/13
- 2. श्रीमद्भगवद्गीता 2/31
- 3. श्रीमद्भगवद्गीता 5/17
- 4. श्रीमद्भगवद्गीता 7/14
- 5. श्रीमद्भगवद्गीता 8/12-13
- 6. श्रीमद्भगवद्गीता 9/25
- 7. श्रीमद्भगवद्गीता 16/22